भारत का निर्यात 860 अरब डॉलर रिकॉर्ड

वैश्विक चुनौतियों के बीच ऐतिहासिक उपलब्धि, नए व्यापार समझौतों से बढ़ेगा विस्तार

नई दिल्ली, 16 अप्रैल. वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और व्यापारिक चुनौतियों के बावजूद भारत ने वित्त वर्ष 2025-26 में कुल 860 अरब डॉलर का निर्यात हासिल कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है.

इस उपलब्धि को देश की आर्थिक मजबूती और वैश्विक व्यापार में बढ़ती हिस्सेदारी का प्रतीक बताया जा रहा है. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने आधिकारिक आंकड़ों पर प्रतिक्रिया देते हुए इसे 'देश के लिए अत्यंत गर्व का क्षण' बताया.

उन्होंने कहा कि यह रिकॉर्ड न केवल भारत की निर्यात क्षमता को दर्शाता है, बल्कि यह भी साबित करता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक झटकों के बावजूद लचीली और मजबूत बनी हुई है.

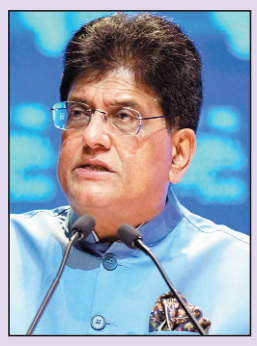

गोयल ने आगे कहा कि सरकार 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' को प्राथमिकता देते हुए लगातार सुधार कर रही है. व्यापार प्रक्रियाओं को सरल बनाने, लॉजिस्टिक्स लागत कम करने और डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग को बढ़ावा देने जैसे कदमों से निर्यातकों को काफी लाभ मिल रहा है. इसके अलावा, निवेशक-अनुकूल माहौल तैयार करने पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिससे विदेशी निवेश को आकर्षित करने में मदद मिल रही है.

दुनिया भर में आपूर्ति श्रृंखलाओं में बाधाएं, भू-राजनीतिक तनाव और मांग में उतार-चढ़ाव जैसी चुनौतियों के बावजूद भारत का यह प्रदर्शन उल्लेखनीय है. गोयल के अनुसार, यह सफलता विभिन्न क्षेत्रों—जैसे विनिर्माण, सेवा, कृषि और डिजिटल निर्यात—में संतुलित वृद्धि का परिणाम है. उन्होंने इस उपलब्धि का श्रेय उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता, निर्यातकों की क्षमता और सरकार की नीतिगत पहलों को दिया.

मंत्री ने यह भी रेखांकित किया कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में किए गए नौ प्रमुख व्यापार समझौते भारत के निर्यात को नई दिशा दे रहे हैं. इन समझौतों के माध्यम से भारतीय उत्पादों और सेवाओं को नए बाजारों तक पहुंच मिल रही है, जिससे व्यापार के अवसरों का दायरा लगातार बढ़ रहा है.

पेट्रोलियम, सोना आयात में गिरावट

नई दिल्ली, 16 अप्रैल . देश में मार्च महीने के दौरान पेट्रोलियम और सोने के आयात में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है. पश्चिम एशिया में जारी संकट और आपूर्ति श्रृंखला में बाधाओं के चलते पेट्रोलियम आयात मूल्य के आधार पर 35.91 प्रतिशत घटकर 1,218.28 करोड़ डॉलर रह गया.

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, पिछले वर्ष इसी अवधि में पेट्रोलियम पदार्थों का आयात 1,900.84 करोड़ डॉलर था. विशेषज्ञों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और भू-राजनीतिक तनावों का सीधा असर आपूर्ति पर पड़ा है, जिससे आयात में यह गिरावट देखने को मिली है. इसी तरह सोने के आयात में भी गिरावट दर्ज की गई है.

मनी लॉन्ड्रिंग रोकने को एजेंसियों का सहयोग

संदिग्ध लेन-देन पर संयुक्त निगरानी व्यवस्था

घरेलू और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा

नई दिल्ली, 16 अप्रैल देश में मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य वित्तीय अपराधों पर प्रभावी रोक लगाने के लिए वित्तीय खुफिया इकाई-भारत भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड तथा पेंशन निधि विनियामक एवं विकास प्राधिकरण ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है.

इन तीनों प्रमुख नियामक संस्थाओं ने दो अलग-अलग समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसका उद्देश्य आपसी सहयोग, समन्वय और सूचना साझा करने की प्रक्रिया को मजबूत करना है.

वित्त मंत्रालय के अनुसार, इन समझौतों के तहत वित्तीय क्षेत्र के

सभी संबंधित नियामक अपने-अपने डेटाबेस से सूचनाओं का आदान-प्रदान करेंगे, जिससे संदिग्ध वित्तीय लेन-देन की पहचान और निगरानी अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकेगी. यह संपूर्ण व्यवस्था धन शोधन निवारण अधिनियम के प्रावधानों के अनुरूप संचालित की जाएगी.

इस पहल का मुख्य उद्देश्य मनी लॉन्ड्रिंग, आतंकवाद के वित्तपोषण और अन्य वित्तीय अपराधों पर सख्त नियंत्रण स्थापित करना है.

सरकार का मानना है कि वित्तीय प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ाने और अवैध गतिविधियों पर प्रभावी निगरानी के लिए नियामक संस्थाओं के बीच बेहतर तालमेल अत्यंत आवश्यक है. इसी दिशा में यह सहयोगात्मक ढांचा तैयार किया गया है. इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया गया है. संबंधित एजेंसियां विदेशी वित्तीय आसूचना इकाइयों के साथ भी सूचनाओं का आदान-प्रदान करेंगी, जो एगमोंट सिद्धांतों के तहत किया जाएगा. इससे वैश्विक स्तर पर वित्तीय अपराधों की रोकथाम को और मजबूती मिलेगी.

नोवा 2 अल्ट्रा सेल शुरू

भोपाल, 16 अप्रैल — एआई +स्मार्टफोन ने अपने नए स्मार्टफोन नोवा 2 अल्ट्रा की बिक्री शुरू कर दी है, जो कंपनी की नई लॉन्च की गई नोवा सीरीज़ का हिस्सा है. नोवा लाइनअप का सबसे उन्नत मॉडल माना जा रहा नोवा 2 अल्ट्रा 17 अप्रैल 2026 को दोपहर 12 बजे से पहले दिन की सेल में केवल फ्लिपकार्ट और चुनिंदा रिटेल स्टोर्स पर उपलब्ध होगा.

पहले दिन के बाद इसकी बिक्री फिर से 24 अप्रैल 2026 को शुरू की जाएगी, जिससे ग्राहकों को इसे खरीदने का एक और अवसर मिलेगा. इससे पहले लॉन्च हुए नोवा 2 मॉडल को भी जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली थी और पहले ही दिन केवल 15 मिनट के भीतर सभी यूनिट्स

बिक गए थे, जो इस सीरीज़ की मजबूत मांग को दर्शाता है. कंपनी का दावा है कि नोवा 2 अल्ट्रा प्रदर्शन और फीचर्स के मामले में इस सेगमेंट में नई संभावनाएं पेश करता है.

यह स्मार्टफोन मीडियाटेक डायमेंसिटी 7400 चिपसेट, 6.78 इंच 1.5के एमोलेड डिस्प्ले, 120 हर्ट्ज रिफ्रेश रेट और 6000 एमएएच बैटरी के साथ आता है. इसमें 50 मेगापिक्सेल सोनी प्राइमरी कैमरा, 8 मेगापिक्सेल वाइड लेंस और 13 मेगापिक्सेल फ्रंट कैमरा दिया गया है.

शुभ से स्मार्ट तक : रिलायंस ज्वेल्स नई शुरुआत

आकर्षक मूल्य-आधारित ऑफ़र के साथ सोने और हीरे के गहनों को और सुलभ बनाया जा रहा है

मुंबई, 16 अप्रैल भारत के सबसे भरोसेमंद गहनों के ब्रांड्स में से एक, रिलायंस ज्वेल्स ने अक्षय तृतीया पर एक ताज़ा और मूल्य-आधारित दृष्टिकोण के साथ कदम रखा है. इस ब्रांड ने सोने और हीरे के नए कलेक्शन पेश किए हैं, जो त्योहारी खरीदारी को अधिक स्मार्ट और सुलभ बनाने के लिए तैयार किए गए हैं.

ग्राहक सोने के गहनों पर मात्र 9% मेकिंग चार्ज और हीरे के गहनों के सोने के मूल्य पर 99% की छूट का लाभ उठा सकते हैं – यानी उन्हें केवल हीरों की कीमत चुकानी होगी. यह सचमुच एक बेमिसाल फेस्टिव ऑफ़र है. यह ऑफ़र 19 अप्रैल 2026 तक मान्य है. इस अक्षय तृतीया पर ग्राहक सोने और

हीरे की बालियों, अंगूठियों, कंगनों और चेन सहित गहनों की विस्तृत श्रंखला में से अपनी पसंदीदा गहने चुन सकते हैं. इस कलेक्शन में स्टड्स, हूप्स और स्लीक फिंगर रिंग जैसे रोज़मर्रा के पसंदीदा गहनों के साथ-साथ झुमकी, चाँदबाली, स्टेटमेंट नेकलेस और बारीक कारीगरी वाले कंगन जैसी फ़ेस्टिव स्टाइल गहने भी शामिल है. डेली वेयर से लेकर ब्राइडल ज्वेलरी तक के विकल्पों के साथ, यह कलेक्शन गहनों को पसंद करने वालों को डिज़ाइनों की विविधता और बेहतरीन मूल्य, दोनों प्रदान करता है.

सोने की कीमतों में जारी उतार-चढ़ाव और उपभोक्ताओं के व्यवहार में आते बदलाव के बीच, रिलायंस ज्वेल्स एक महत्वपूर्ण बदलाव की ओर ध्यान दिलाता है – आज गहने केवल एक परंपरागत खरीद नहीं, बल्कि एक स्मार्ट और पहनने योग्य निवेश भी है. उपभोक्ता अब ऐसी डिज़ाइनों की तलाश में हैं, जो भावनात्मक मूल्य और व्यावहारिक खर्च के बीच अच्छा संतुलन बनाएं.

अक्षय तृतीया ऑफ़र के बारे में रिलायंस ज्वेल्स के प्रवक्ता ने कहा कि 'सोने की कीमतों में चल रहे उतार-चढ़ाव के बीच, उपभोक्ताओं का व्यवहार भी स्पष्ट रूप से बदल रहा है – आज के ग्राहक अधिक जागरूक, मूल्य-सचेत और विवेकशील हैं. रिलायंस ज्वेल्स में हमने इसी गहरी समझ के आधार पर अक्षय तृतीया के लिए मूल्य-आधारित कलेक्शन लॉन्च किया है और रिलायंस ज्वेल्स को न केवल इस परंपरा का अभिन्न हिस्सा माना है, बल्कि इसे एक स्मार्ट, पहनने योग्य निवेश के रूप में स्थापित किया है. यह आज के समय के अनुकूल है और 'शुभ' के साथ 'स्मार्ट' तरीके से उत्सव मनाने को एक साथ जोड़ता है.'

ऊर्जा क्षेत्र में बड़ा निवेश समझौता

600 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा को लेकर समझौता हुआ

नई दिल्ली, 16 अप्रैल देश में ऊर्जा क्षेत्र को मजबूती देने की दिशा में दो बड़ी विकासात्मक खबरें सामने आई हैं. एक ओर जहां नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए गेल इंडिया और टुस्को लिमिटेड के बीच उत्तर प्रदेश में 600 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा प्रोजेक्ट को लेकर समझौता हुआ है, वहीं दूसरी ओर केंद्र सरकार कोयला उत्पादन बढ़ाने और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए 17 अप्रैल से वाणिज्यिक कोयला खदानों की 15वीं नीलामी शुरू करने जा रही है.

कोयला मंत्रालय की इस नीलामी प्रक्रिया के साथ मुंबई में एक महत्वपूर्ण हितधारक परामर्श बैठक भी आयोजित की जाएगी, जिसका उद्देश्य ऊर्जा क्षेत्र से जुड़े विभिन्न पक्षों के बीच संवाद स्थापित करना है. इस बैठक की थीम 'आत्मनिर्भर भारत: ऊर्जा सुरक्षा के लिए कोयला' रखी गई है. कार्यक्रम में कोयला सचिव विक्रम देव दत्त मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे.

मंत्रालय के अनुसार, इस नीलामी दौर में पूरी तरह और आंशिक रूप से खोजे गए नए कोयला ब्लॉकों की पेशकश की जाएगी, जिससे स्थापित कंपनियों के साथ-साथ नए निवेशकों और तकनीक आधारित प्रतिभागियों को भी अवसर मिलेगा. सरकार का उद्देश्य घरेलू कोयले की उपलब्धता बढ़ाना, आयात पर निर्भरता कम करना और ऊर्जा क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित करना है.

वर्ष 2020 में शुरू किए गए वाणिज्यिक कोयला खनन सुधारों के बाद से इस क्षेत्र में निजी भागीदारी को बढ़ावा मिला है. इन सुधारों के तहत पारदर्शिता, प्रतिस्पर्धा और समान अवसर सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया गया है. इसके परिणामस्वरूप कोयला उत्पादन में वृद्धि दर्ज की गई है और बिजली, इस्पात तथा सीमेंट जैसे उद्योगों को स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित हुई है. सरकार की यह पहल 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन के अनुरूप ऊर्जा क्षेत्र को मजबूत बनाने और देश की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है.

सोना-चांदी के दाम में तेज उछाल दर्ज

800 रुपए महंगा हुआ सोना

4,000 रुपए महंगी हुई चांदी

नई दिल्ली, 16 अप्रैल. अक्षय तृतीया से पहले देश में सोना और चांदी की कीमतों में तेज उछाल दर्ज किया गया है. घरेलू व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में खरीदारी बढ़ने और निवेशकों की मांग मजबूत होने से दोनों कीमती धातुओं के दाम ऊपर चले गए.

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर शुरुआती कारोबार में चांदी की

कीमत में करीब 4,000 रुपये तक की तेजी देखी गई, जबकि सोना भी लगभग 800 रुपये महंगा हो गया. चांदी का मई डिलीवरी अनुबंध दिन के दौरान लगभग 2,55,735 रुपये प्रति किलोग्राम के उच्च स्तर तक पहुंच गया, जबकि सोना जून डिलीवरी अनुबंध 1,54,809 रुपये प्रति 10 ग्राम तक चढ़ा. सुबह 10 बजे के आसपास चांदी करीब 2,54,731 रुपये और सोना लगभग 1,54,623 रुपये पर कारोबार कर रहा था, जो क्रमश: 1.19 प्रतिशत और करीब आधा प्रतिशत की तेजी दर्शाता है. विशेषज्ञों के अनुसार, वैश्विक स्तर पर भी कीमती धातुओं में मजबूती बनी हुई है. अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना करीब 4,795 डॉलर प्रति औंस और चांदी लगभग 78 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर कारोबार कर रही है, हालांकि इसमें हल्की गिरावट भी दर्ज की गई है.

कोयला खदानों की 15वीं नीलामी शुरू

मुंबई, 16 अप्रैल देश में ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करने और कोयला उत्पादन बढ़ाने की दिशा में केंद्र सरकार एक और महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रही है. कोयला मंत्रालय 17 अप्रैल से वाणिज्यिक कोयला खदानों की नीलामी का 15वां दौर शुरू करेगा. इस अवसर पर मुंबई में एक अहम हितधारक परामर्श बैठक का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें क्षेत्र से जुड़े प्रमुख प्रतिनिधि भाग लेंगे. इस बैठक की थीम 'आत्मनिर्भर भारत: ऊर्जा सुरक्षा के लिए कोयला' रखी गई है.

शेयरों में मुनाफा वसूली से बाजार में गिरावट

मुंबई, 16 अप्रैल घरेलू शेयर बाजारों में गुरुवार को शुरुआती तेजी के बाद दिग्गज कंपनियों में ऊंचे भाव पर मुनाफावसूली देखी गयी और प्रमुख सूचकांक गिरावट में बंद हुए.

सुबह 566 अंक चढ़कर खुलने वाला बीएसई का सेंसेक्स 122.56 अंक (0.16 प्रतिशत) गिरकर 77,988.68 अंक पर रहा. नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक भी 34.55 अंक यानी 0.14 प्रतिशत नीचे 24,196.75 अंक पर बंद हुआ.

सेंसेक्स में आज एक हजार अंक से अधिक का उतार-चढ़ाव रहा. यह ऊपर 78,730.32 अंक और नीचे 77,674.93 अंक तक गया.प्रमुख सूचकांकों के विपरीत वृहत बाजार में सभी सूचकांक हरे निशान में रहे. मझौली और छोटी कंपनियों में अच्छी लिवाली देखी गयी.

समाचार विशेष

कांग्रेस के लिए चुनाव समाप्त हो गया

नई दिल्ली. अभी देश के दो बड़े राज्यों में चुनाव होना है. पश्चिम बंगाल की 152 और तमिलनाडु की सभी 234 सीटों पर 23 अप्रैल को मतदान होगा, जबकि बंगाल की बची हुई 142 सीटों पर 29 अप्रैल को वोट डाले जाएंगे. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की धुआंधार चुनावी रैलियां हो रही हैं.

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 15 दिन तक पश्चिम बंगाल में डेरा डालने का ऐलान किया है. लेकिन ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस पार्टी के लिए चुनाव समाप्त हो गया है. कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने वैसे भी अपने को तमिलनाडु के प्रचार से दूर रखा है. वे अभी तक तमिलनाडु चुनाव प्रचार करने नहीं गए हैं. उन्होंने पश्चिम बंगाल में भी चुनाव प्रचार में हिस्सा नहीं लिया है. राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा दोनों का फोकस केरल, पुडुचेरी और असम पर था.

हालांकि इन राज्यों में भी दोनों भाई बहन ने वैसा धुआंधार प्रचार नहीं किया, जैसा प्रधानमंत्री मोदी ने किया. सोचें, केरल में भाजपा का कुछ भी नहीं है. वह खाता खोलने के लिए लड़ रही है. पिछली बार यानी 2021 में वह अपनी जीती हुई एकमात्र नेमोम की सीट हार गई थी. इस सीट से इस बार प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर चुनाव लड़ रहे हैं.

भाजपा के अपने नेता तीन से पांच सीट मिलने की उम्मीद कर रहे हैं. फिर भी प्रधानमंत्री मोदी ने प्रचार में कोई कसर नहीं छोड़ी. उन्होंने तमिलनाडु में भी प्रचार किया, जहां उनकी पार्टी सिर्फ 27 सीटों पर लड़ रही है और पिछली बार की चार सीटों के आंकड़े में सुधार की उम्मीद कर रही है. पुडुचेरी में भाजपा 10 सीटों पर लड़ रही है और वहां भी प्रधानमंत्री और राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित सबने प्रचार किया.

मात्र औपचारिकता निभाएंगे राहुल

इसके उलट कांग्रेस ने इन चुनावों में ज्यादा जोर लगाने की जरुरत नहीं समझी. राहुल गांधी पुडुचेरी में तो गए लेकिन तमिलनाडु में प्रचार नहीं किया. कहा गया है कि अब तीन राज्यों के चुनाव खत्म हो गए हैं तो राहुल तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में जनसभा को संबोधित करेंगे. लेकिन वह औपचारिकता के लिए है. सोचें, तमिलनाडु में कांग्रेस ने डीएमके की गर्दन पर तलवार रख कर तीन सीटें ज्यादा लीं और 28 सीट पर लड़ रही है. उसने पिछली बार 25 में से 18 सीटें जीती थीं और लोकसभा में कांग्रेस के नौ सांसद तमिलनाडु से आते हैं. लेकिन राहुल गांधी सिर्फ औपचारिकता के लिए वहां प्रचार करने जाएंगे!

सिलीगुड़ी में गर्माया चुनावी माहौल

क्या भाजपा बचा पाएगी अपना गढ़ या दीदी का दांव पड़ेगा भारी

कोलकाता. सिलीगुड़ी शहर इन दिनों केवल अपनी चाय और पर्यटन के लिए नहीं, बल्कि सियासी पारा चढ़ने के कारण चर्चा में है. पश्चिम बंगाल के तीसरे सबसे बड़े शहरी केंद्र सिलीगुड़ी में 23 अप्रैल को लोकतंत्र का महापर्व मनाया जाएगा.

रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण यह शहर न केवल उत्तर-पूर्व भारत का प्रवेश द्वार है, बल्कि नेपाल, बांग्लादेश और भूटान जैसे देशों की सीमाओं के करीब होने के कारण इसका आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व भी बहुत अधिक है. पिछले चुनाव में यहां भाजपा ने पहली बार अपना खाता खोला था, जिससे सिलीगुड़ी की पारंपरिक राजनीति में एक बड़ा बदलाव आया. अब सवाल यह है कि क्या भाजपा अपनी इस बढ़त को बरकरार रख पाएगी या तृणमूल कांग्रेस इस बार कोई नया करिश्मा दिखाएगी.

सिलीगुड़ी विधानसभा सीट का इतिहास काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा है. साल 1951 में अस्तित्व में आने वाली यह सीट दार्जिलिंग लोकसभा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है.

भाजपा और तृणमूल के बीच होने वाली कांटे की टक्कर

आगामी 2026 के चुनावों में मुकाबला मुख्य रूप से भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच ही सिमटता नजर आ रहा है. साल 2021 के चुनाव परिणामों पर गौर करें तो भाजपा ने यहां करीब 50 प्रतिशत वोट हासिल किए थे, जो उनकी मजबूत जमीनी पकड़ को दर्शाता है. दूसरी ओर, ममता बनर्जी की पार्टी सिलीगुड़ी की इस रणनीतिक सीट को फिर से हासिल करने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक रही है. हालांकि वाम मोर्चा और कांग्रेस गठबंधन की स्थिति यहां पहले की तुलना में काफी कमजोर हुई है और उनका वोट शेयर पिछले कुछ चुनावों में लगातार गिरा है.

ओडिशा में बदलेगी सियासी तस्वीर?

भुवनेश्वर. ओडिशा की राजनीति में पंचायत और नगर निकाय चुनाव से पहले बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है. प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष भक्त चरण दास के बयान ने सियासी हलचल तेज कर दी है.

उन्होंने कांग्रेस और बीजेडी के बीच संभावित गठबंधन के संकेत दिए हैं, जिससे राज्य की पारंपरिक राजनीतिक समीकरणों में बदलाव की चर्चा शुरू हो गई है. खुर्दा में कांग्रेस कार्यालय के उद्घाटन के मौके पर दास ने साफ कहा कि यदि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व हरी झंडी देता है, तो बीजू जनता दल (बीजेडी) के साथ गठबंधन संभव है. उन्होंने कहा कि अंतिम फैसला

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के स्तर पर लिया जाएगा.

दास ने कहा कि अगर वरिष्ठ नेता राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे यह मानते हैं कि ओडिशा में सेक्युलर दलों का गठबंधन जरूरी है, तो इस दिशा में कदम बढ़ाया जा सकता है. उन्होंने यह भी याद दिलाया कि राज्यसभा चुनाव के दौरान इस तरह के सहयोग की शुरुआत हो चुकी है. उन्होंने दो टूक कहा कि पीसीसी स्तर पर कांग्रेस हर पंचायत और जिला परिषद सीट जीतने की तैयारी कर रही है, लेकिन यदि राष्ट्रीय हित में गठबंधन की जरूरत पड़ी, तो पार्टी हाईकमान के फैसले का पालन किया जाएगा.

विशेष | **बंगाल की बेहाला पश्चिम सीट पर इस चुनाव में क्या होगा?**

भाजपा दो दशक में भी नहीं भेद पाई सियासी तिलस्म

कोलकाता. कोलकाता की सड़कों पर जब आप डायमंड हार्बर रोड से गुजरते हैं, तो बेहाला चौराहे की गहमागहमी आपको एक अलगदुनिया का अहसास कराती है. यह सिर्फ एक रिहायशी इलाका नहीं, बल्कि पश्चिम बंगाल की राजनीति का वह केंद्र है जिसने सत्ता के बड़े-बड़े उलटफेर देखे हैं.

बेहाला पश्चिम विधानसभा सीट की कहानी किसी फिल्मी स्क्रिप्ट से कम नहीं है, जहां कभी लाल झंडे का राज हुआ करता था, लेकिन आज यह तृणमूल कांग्रेस का सबसे मजबूत किला बन चुका है. जब इस क्षेत्र के चुनावी इतिहास को खंगाला जाता है तो यहां के मतदाताओं की चुप्पी और उनके फैसले कई गहरे राज खोल देते हैं. बेहाला का सियासी सफर

1951 में शुरू हुआ था, जब यह एक सामान्य सीट हुआ करती थी. उस दौर में यहां फॉरवर्ड ब्लॉक और कम्युनिस्ट पार्टी का दबदबा रहा. 1967 में जब इसे पूर्व और पश्चिम में बांटा गया, तब से लेकर 2006 तक यहां वामपंथियों ने 11 में से 9 बार जीत हासिल की. लेकिन साल 2001 में इस गढ़ में पहली बार सेंध लगी. टीएमसी के पार्थ चटर्जी ने अपनी जीत का जो सिलसिला शुरू किया, वह आज तक नहीं थमा है. 2011 के परिसीमन के बाद जब कोलकाता नगर निगम के वार्ड 118 से 132 तक की सीमाएं तय हुईं, तो टीएमसी की पकड़ और भी मजबूत हो गई. हालांकि 2016 में सीपीएम ने कड़ी टक्कर दी थी और जीत का अंतर काफी कम रह गया था, लेकिन 2021 में टीएमसी ने फिर से 50 हजार से ज्यादा वोटों के अंतर से अपनी ताकत दिखाई. बेहाला सिर्फ राजनीति नहीं, बल्कि बंगाल की समृद्ध विरासत का प्रतीक भी है. सबर्णा रॉय जैसे जमींदार परिवारों की जड़ों से जुड़ा यह इलाका आज जोका-एस्प्लेनेड मेट्रो कॉरिडोर के जरिए आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है.

क्या भाजपा 2026 में बेहाला में रच पाएगी इतिहास?

अगर हम लोकसभा चुनाव के आंकड़ों पर नजर डालें, तो बेहाला पश्चिम ने हमेशा टीएमसी का साथ दिया है. 2009 से लेकर 2024 तक लगातार चार लोकसभा चुनावों में यहां से टीएमसी को बढ़त मिली है. दिलचस्प बात यह है कि जहां विधानसभा चुनावों में मतदाता बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं, वहीं लोकसभा में मतदान का प्रतिशत थोड़ा कम रहता है. 2024 के आंकड़े बताते हैं कि यहाँ मतदाताओं की संख्या बढ़कर करीब 3.18 लाख हो गई है. कागजी तौर पर देखें तो 2026 की राह टीएमसी के लिए आसान दिखती है क्योंकि उन्होंने लगातार नौ बार जीत का स्वाद चखा है. भाजपा के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अभी तक एक बार भी जीत का खाता नहीं खोल पाई है, जबकि लेफ्ट और कांग्रेस का गठबंधन फिलहाल कमजोर नजर आ रहा है.